Self Respect

21-08-2014

✓मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझाते हैं-तुमको स्मृति आई है कि हम आदि सनातन देवी- देवता धर्म के थे, हम राज्य करते थे, हम बरोबर विथ के मालिक थे ।

✓सारे सृष्टि चक्र का नॉलेज तुम बच्चों को ही है, इसको कहते हैं ज्ञान-विज्ञान । उन्होंने विज्ञान भवन नाम भल रखा है परन्तु बाप उसका अर्थ समझाते हैं - ज्ञान और योग, रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान, अभी तुम समझते हो कि हम भी नहीं जानते थे, नास्तिक थे । सतयुग में तो यह ज्ञान हो नहीं सकता । अभी तुमको टीचर ने पढ़ाया है । पढ़कर तुमको राज्य-भाग्य मिलता है क्योंकि तुमको रहने के लिए नई सृष्टि चाहिए । इस पुरानी सृष्टि में तो पवित्र देवी-देवतायें पैर रख न सके । बाप आकर तुम्हारे लिए पुरानी दुनिया का विनाश कर नई दुनिया स्थापन करते हैं । हमारे लिए विनाश जरूर होना है । कल्प-कल्पान्तर हम यह पार्ट बजाते हैं ।

✓बाबा पूछते हैं आगे कब मिले हो? तो कहते हैं-बाबा, हर कल्प मिलते हैं, आप से राज्य भाग्य लेने । कल्प पहले भी बेहद सुख का राज्य भाग्य मिला था । यह सब बातें जो स्मृति में आई हैं, अब उनका सिमरण होना चाहिए, जिसको बाबा स्वदर्शन चक्र कहते हैं

✓अभी तुम मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ते हो । तुम जानते हो कि हम फिर से नई दुनिया में जायेंगे । उसका नाम ही है अमरलोक । यह है मृत्युलोक

✓अब बाप तुमको कहते हैं - स्वदर्शन चक्रधारी बच्चों, यह अलंकार तुम्हारे हैं । गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान तुम रहते हो । सिवाए तुम्हारे और कोई रह न सके ।

- ✓यह भी बच्चों को स्मृति आई है कि बेहद के बाप से हम ऊंच ते ऊंच वर्सा लेते हैं, कल्प-कल्प लेते हैं । तुम्हारे पास बहुत आयेंगे, आकर महामन्त्र लेंगे मनमनाभव का । मनमनाभव का अर्थ है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो । यह है महान् मन्त्र, महान् आत्मा बनने के लिए ।
- ✓अभी तुम जानते हो यह तो विनाश की तैयारियाँ हो रही हैं । उन्हों की है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स । तुम जितना साइलेन्स में जायेंगे उतना वह विनाश के लिए अच्छी-अच्छी चीजें तैयार करते रहेंगे । दिन-प्रतिदिन महीन चीजें बनाते रहते हैं । तुमको अन्दर में खुशी होती है-बाबा तो हमारे लिए नई दुनिया बनाने आये हैं । तो अब हम पुरानी दुनिया में थोड़ेही रहेंगे ।

- ✓वह तो रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते ही नहीं हैं । तुम जानते हो । तुम कितनी रोशनी में हो । मनुष्य तो घोर अन्धियारे में हैं । फर्क है ना । ज्ञान अंजन सतगुरू दिया अज्ञान अन्धेर विनाश । भक्ति वाले ज्ञान को नहीं जानते हैं । अभी तुम भक्ति को भी जानते हो तो ज्ञान को भी जानते हो । सारी स्मृति आई है- भक्ति कब शुरू होती है, फिर कब पूरी होती है ।
- ✓जानते हो हमने पहले-पहले शिव की भक्ति की, फिर देवताओ की । और कोई को भी यह स्मृति नहीं है, तुमको रचना के आदि-मध्य-अन्त, भक्ति आदि की सब स्मृति है ।

- ✓सबको तुम यही समझाते हो, तुम्हारे पास हजारों आते हैं । तुम मेहनत करते हो भाई-बहिनों को रास्ता बताने की । ज्ञान और भक्ति की स्मृति आई है । गोया तुम सारे ड्रामा को नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जान गये हो । जो जितना अच्छी रीति जानते हैं वह समझा भी सकते हैं । समझाना तो बच्चों को ही है । गायन भी है सन शोज फादर । बाप बच्चों को समझायेंगे, बच्चे फिर और भाइयों को समझायेंगे ।
- ✓तुम पतित बनते हो तो पावन बनाने के लिए बाप तुम पर कितनी मेहनत करते हैं इसलिए गायन है कुर्बान जाऊं... वारी जाऊं । किस पर? बाप पर ।
- ✓तुम्हारा तो है ही बेहद का सन्यास । पुरानी दुनिया अब गई की गई । यह कब्रिस्तान है फिर परिस्तान होना है । वहाँ हीरे-जवाहरों के महल बनेंगे । यह लक्ष्मी-नारायण परिस्तान के मालिक थे ना ।

✓बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ । यह सारा चक्र रिपीट होता ही रहता है । इस समय तुमको सब स्मृति आई है, जबकि बाप ने स्मृति दिलाई है । आगे कुछ भी बुद्धि में नहीं था । इस स्मृति के नशे में जब रहेंगे तो किसको उस खुशी से समझा भी सकेंगे ।

✓अच्छा! सदा स्मृति के नशे में रहने वाले मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

✓ बाप के प्यार में अपनी मूल कमजोरी कुर्बान करने वाले ज्ञानी तू आत्मा भव !

✓ स्वमान की सीट पर स्थित रह सर्व को सम्मान देने वाले माननीय आत्मा बनो |